AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

बिहार के गढ़पुरा (बेगूसराय) में नमक सत्याग्रह आंदोलन और डॉ. श्रीकृष्ण सिंह की भूमिका

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. शिप्रा
इतिहास विभाग
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
इब्राहिमपुर, मसौढ़ी, पटना, बिहार, भारत

शोध सार

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में सन् 1930 ई. का नमक सत्याग्रह एक गौरवशाली अध्याय है जिसमें डॉ. श्रीकृष्ण सिंह का अद्भूत साहस उनकी अपार कष्ट सहिष्णूता स्वर्णाक्षरों में अंकित है। बिहार में स्वाधीनता संग्राम को उनकी अग्रणीय भूमिका ने न केवल प्रखरता प्रदान की बल्कि युवा पीढ़ी को प्रगाढ़ राष्ट्रप्रेम और क्रांतिकारी जोश से भी भरकर उत्प्रेरित किया। इन्होंने नमक सत्याग्रह में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के आह्वान पर सक्रिय रूप से भाग लिया था। तभी तो महात्मा गाँधी ने इन्हें 'बिहार के प्रथम सत्याग्रही' के अलंकरण से विभूषित किया था।

मुख्य शब्द

स्वाधीनता संग्राम, सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा आंदोलन, डांडी मार्च, स्वयंसेवक, अंग्रेजी हुकूमत.

भूमिका

स्वाधीनता संग्राम में डॉ. श्रीकृष्ण सिह जब नौवीं वर्ग में पढ़ते थे उसी समय ब्रिटिश साम्राज्यवाद से देश को मुक्त कराने का संकल्प ले चुके थे। कहा जाता है कि अपने स्कूल के एक बंगाली शिक्षक के विचारों से प्रभावित होकर एक दिन वे एक हाथ में गीता और दूसरे हाथ में कृपाण लेकर कष्टहरणी घाट पर गंगा में छाती भर पानी में खड़ा हो कर प्रतिज्ञा ली कि ब्रिटिश राज को भारत से हटाकर ही दम लेंगे। उनकी यह प्रतिज्ञा 1947 ई. तक यानि देश की आजादी होने तक बनी रही। इस दौरान वे निरन्तर संघर्ष करते हुए तकरीबन नौ वर्ष बिहार के विभिन्न कारावासों में बिताए।[1]

स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में 1930–34 ई. तक चले सविनय अवज्ञा आन्दोलन एक महत्वपूर्ण कड़ी है। 3 दिसम्बर, 1929 ई. को लाहौर के रावी नदी के तट पर मध्यरात्री को स्वतंत्र भारत का तिरंगा झंडा फहराया गया तथा पूर्ण स्वराज्य का लक्ष्य घोषित किया गया।[2]

अधिवेशन में यह प्रस्ताव पास किया गया कि गाँधी जी "जब चाहें जहाँ चाहे सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारम्भ कर" करबंदी तथा नमक कानून भंग कर सकते हैं। आंदोलन प्रारम्भ करने के पूर्व महात्मा गाँधी ने संघर्ष रोकने का प्रयत्न किया था। उन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों को पत्र लिख कर कॉग्रेस से समझौता करने उनकी ग्यारह शर्तें स्वीकार करने का आग्रह किया था लेकिन लार्ड इरविन ने उनके आग्रह को ठुकरा दिया था। इस पर गाँधी जी ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि मैंने रोटी माँगी थी और मुझे उत्तर में पत्थर मिला।[3]

अंततः महात्मा गाँधी ने एक मात्र विकल्प सविनय अवज्ञा आदोलन के लिए देशवासियों का आह्वान किया। सविनय अवज्ञा आदोलन का आरम्भ गाँधी जी नमक सत्याग्रह के साथ आरम्भ किया। इसके पीछे उनकी सोच थी कि नमक पर सरकार का एकाधिकार था और उस पर गरीब नागरिक को वर्ष में पाँच आने की दर से कर देना पड़ता था और यह उसकी तीन दिनों की आय थी। अतः महात्मा गाँधी ने इस एकाधिकार एवं कर के विरोध में नमक सत्याग्रह करना उपर्युक्त समझा। 12 मार्च 1930 ई. को सुबह छः बजे गाँधी जी नमक कानून तोड़ने के लिए 79 स्वयं सेवकों के साथ साबरमती आश्रम (अहमदाबाद) से लगभग 200 मील दूर समुद्र किनारे डांडी नामक स्थान की ओर चल पड़े। 24 दिनों की यात्रा के पश्चात् 6 अप्रैल को उन्होंने समुद्र के किनारे नमक बनाकर कानून का उल्लंघन किया।[4]

इस सत्याग्रह आंदोलन पर अमेरिका की मशहूर पत्रिका टाईम ने 2011 के अक्टूबर अंक में डांडी मार्च (नमक सत्याग्रह) को दुनिया के बदल देने वाले 10 महत्वपूर्ण आंदोलनों की सूची में दूसरे स्थान पर रखा है। इससे महात्मा गाँधी के नेतृत्व में हुए नमक सत्याग्रह आंदालन एवं इसकी व्यापकता का पता चलता है।

महात्मा गाँधी के इस आह्वान का व्यापक असर सारे देश के साथ ही बिहार में भी हुआ। डॉ. श्रीकृष्ण सिंह ने भी कौंसिल जाना बंद कर अपने सहयोगियों एवं नेताओं के साथ गाँव–गाँव का दौरा कर नमक कानून उल्लंघन की तैयारी शुरू कर दी। 2 अप्रैल 1930 को मुंगेर में जिला काँग्रेस कमिटी की बैठक डॉ. श्रीकृष्ण सिंह की अध्यक्षता में हुई जिसमें नमक कानून भंग करने का निर्णय लिया गया। इसके लिए दो स्थानों का चयन किया गया।[5]

सदर सब डिविजन में चौकी ग्राम तथा बेगूसराय में गढ़पुरा ग्राम चौकी ग्राम के प्रभारी श्री शशि भूषण राय और गढ़पुरा के श्रीकृष्ण सिंह बनाए गए तथा यह भी निश्चय हुआ कि नमक कानून भंग करने के लिए स्वयं सेवकों को अपने–अपने गंतव्य स्थान पर पैदल ही पहुँचना होगा।[6]

जिस समय बिहार में नमक सत्याग्रह प्रारम्भ किया गया था उस समय डॉ. श्रीकृष्ण सिंह का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। राजेन्द्र प्रसाद नहीं चाहते थे कि इस नमक सत्याग्रह की बागडोर स्वयं डॉ. श्रीकृष्ण सिंह संभालें, किन्तु अपनी अस्वस्थता के बावजूद 17 अप्रैल 1930 को गोगरी के ग्यारह सत्याग्रहियों के साथ उन्होंने मुंगेर से गढ़पुरा के लिए प्रस्थान किया। सत्याग्रह में भाग लेने वाले स्वयंसेवकों को विभिन्न सत्याग्रही जत्थे में बाँट दिया। प्रत्येक जत्थे का नामकरण देश के सम्मानित नेताओं के नाम पर रखा। 'गाँधी जत्था', 'तिलक जत्था', 'जवाहरलाल नेहरू जत्था', 'राजेन्द्र जत्था', 'तिलक जत्था' प्रमुख थे। प्रत्येक जत्थे के स्वयं सेवकों को हिदायत दी कि सरकारी दमन के बावजूद नमक बनाना बंद नहीं होने चाहिए। पुलिसिया कार्यवाही के बावजूद भी हर हाल में आंदोलन की मशाल जलती रहनी चाहिए। आंदोलन के कार्यों में प्रमुख रूप से नमक कानून को तोड़ना, नमक बनाना, मादक वस्तुओं, शराब–अफीम आदि के दुकानों पर धरना देना, सरकारी करों को नहीं देना आदि प्रमुख कार्य थे। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि प्रस्थान करने के पूर्व डॉ. श्रीकृष्ण सिंह ने उस समय के कलेक्टर ली साहब को लिखकर अल्टीमेटम भी दिया था कि हम 24 बोलेन्टियर के साथ महात्मा गाँधी के आदेशानुसार 21 अप्रैल, 1930 को बिना लाइसेंस के गढ़पुरा गाँव में नमक बनायेंगे और बिना टैक्स के नमक खायेंगे। इस पर ली साहब ने जवाब दिया कि यह आपकी मर्जी है कि आप लोग गाँधीजी के आदेश के मुताबिक काम करते हैं और हम ब्रिटिश सरकार के नौकर हैं हमको जो आदेश सरकार देगी हम करेंगे।[7]

मुंगेर से गढ़पुरा की दूरी लगभग 40–50 कि.मी. की थी। 17 अप्रैल को डॉ. श्रीकृष्ण सिंह मुंगेर से चलकर अपने दल–बल के साथ बेगूसराय पहुँच गये। नमक कानून भंग करने की सूचना सरकार को पहले ही दी जा चुकी थी। मुंगेर से बेगूसराय एवं गढ़पुरा तक की पैदल यात्रा के दौरान डॉ. श्रीकृष्ण सिंह का जत्था जिन–जिन गाँवों के पास से गुजरा स्थानीय नागरिकों ने अभूतपूर्व स्वागत किया। सभी सत्याग्रहियों को फूल की माला तथा चन्दन की टीका लगाकर आगे बढ़ने को उत्साहित किया जाता था। 13 अप्रैल,1930 ई. को जत्था मंझौल में श्री राम किशोर सिंह उर्फ राम बाबू के घर पर रात्रि विश्राम किया। दूसरे दिन 19 अप्रैल, 1930 ई. को रात्रि विश्राम सकरा हरमैन नामक गाँव में व्यतीत किया।[8]

चौथे रोज रात को गढ़ौली गाँव में रात्रि विश्राम हुआ। इस प्रकार डॉ. श्रीकृष्ण सिंह सारे जत्थे के साथ अगले दिन गढ़पुरा गाँव पहुँच गए। गढ़पुरावासियों ने उनका नागरिक अभिनन्दन किया। गढ़पुरा पहुँचकर सर्वप्रथम डॉ. श्रीकृष्ण सिंह ने प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की एक मीटिंग बुलाया जिसमें विन्देश्वरी बाबू, महावीर बाबू, बनारसी बाबू, दामोदर बाबू, रामनारायण सिंह और कमलेश्वरी बाबू प्रमुख थे। गाँव के सभी लोगों ने सभी तरह के सहयोग दे आश्वासन दिया और स्थानीय ठाकुरबाड़ी के महन्त सुखराम दास जी ने स्वयंसेवकों को ठहरने के लिए अपनी ठाकुरवाड़ी में जगह दी। यहाँ यह उल्लेख करना जरूरी होगा कि मुंगेर से तो श्रीकृष्ण बाबू 12 आदमी के साथ चले थे लेकिन रास्ते में सैकडों लोग उनके जत्थे में सैकड़ों की संख्या में शामिल हो गए। चेरिया बरियापुर; मंझोल, बिहट (रामचरित्र बाबू) आदि गाँव के लोग उनके जत्थे में सैकड़ों की संख्या में शामिल हो गए। इस प्रकार गढ़पुरा पहुँचकर इन स्वयंसेवकों की संख्या करीब 3–4 हजार तक पहुँच गयी थी। इससे पता चलता है कि इस यात्रा के दौरान जनता का व्यापक जन समर्थन डॉ. श्रीकृष्ण सिंह के नेतृत्व में चलाए गए इस सत्याग्रह को मिला था। 21 अप्रैल को सुबह डॉ. श्रीकृष्ण सिंह गढ़पुरा पहुँचे। पैदल चलने के कारण उनके पैरों में छाले पड़ गए थे। वे कमलेश्वरी बाबू का कंधा पकड़कर चल रहे थे। गोगरी के कमलेश्वरी सिंह मास्टर थे, ये राष्ट्रीय गान बहुत बढ़िया गाते थे। कमलेश्वरी बाबू और विन्देश्वरी बाबू ने मिलकर स्वागत में राष्ट्रीय गीत गाए।[9] इसके बाद डॉ. श्रीकृष्ण सिंह को गढ़पुरा के ही दामोदर बाबू के बंगले पर ले जाया गया जहाँ उनके ठहरने का इंतजाम था।

डॉ. श्रीकृष्ण सिंह द्वारा दिए गए अल्टीमेटन के पश्चात् मुंगेर का कलक्टर ली साहब ने बेगूसराय के [illegible] आपके इलाके में श्री बाबू अपने जत्थे के साथ नमक कानून को तोड़ने जा रहे हैं यह सरकारी नियम के खिलाफ है। सरकारी कानून टूटना नहीं चाहिए। इसके लिए आपको सारा इन्तजाम करना है। आपके पास पर्याप्त सिपाही नहीं है अतः मैं मुंगेर से 50 सिपाही भेज रहा हूँ। विदित हो कि उस समय बेगूसराय सबडिविजन में चार थाने थे। सारे थाने के थानेदारों और पुलिस इंस्पेक्टर तथा एस.पी को बुलाया तथा आदेश दिया कि थाने के सभी सिपाहियों, चौकीदारों तथा दफादारों को गढ़पुरा 20 अप्रैल तक पहुँच जाना है, इस प्रकर सत्याग्रह कार्यक्रम के दो रोज पहले ही 50 मिलिट्री के जवान पहुँच भी गए थे।[10] सत्याग्रह स्थल से थोड़ी दूर पश्चिम में बुधू नोनिया का बगीचा था, इसी में फौज ने अपना कैम्प गिराया। गढ़पुरा गाँव के लोगों ने यह पहले से निश्चय कर रखा था कि अंग्रेजी सरकार के मुलाजिमों को कोई सौदा–पानी का मदद नहीं देना है और तो और गाँव के डाक बंगले को छोड़कर अगल–बगल के सारे कुएँ में गोबर, कादो, किरासन तेल घोलकर डाल दिया गया था। शकरपुरा ड्योढ़ी उस समय कोर्ट ऑफ वार्ड के अर्न्तगत थी। ड्योढ़ी कलक्टर साहब के अधीन थी। वहीं से बैलगाड़ी से फौज के लिए रसद–पानी ढोकर लाया गया।

डॉ. श्रीकृष्ण सिंह दामोदर बाबू के बंगले से 21 तारीख को दिन के करीब डेढ़ बजे सत्याग्रह के लिए रवाना हुए। कॉमरेड ब्रह्ममदेव कमलेश्वरी बाबू और अन्य सैकड़ों लोग इनके साथ चल पड़े। प्रस्थान से पूर्व डॉ. श्रीकृष्ण सिंह के माथे पर तिलक लगाया गया एवं उनकी आरती उतारी गई। सत्याग्रह का स्थल दुर्गागाद्दी में था।[11] वहाँ पर उस समय करीब 50–60 हजार की भीड़ उपस्थित हो गई थी। सभी लोग अपने नेता डॉ. श्रीकृष्ण सिंह की वीरता, साहस और त्याग का प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहते थे। आखिर वह क्षण आ ही गया जिसका महीनों से तैयारी चल रही थी। डॉ. श्रीकृष्ण सिंह ने पण्डाल में प्रवेश कर सबसे पहले तिरंगा का अभिवादन किया फिर कहा कि नमक बनाने का कार्यक्रम प्रारंभ किया जाए। इस अवसर पर डॉ. श्रीकृष्ण सिंह ने संक्षिप्त में भाषण देते हुए कहा कि–''मैंने कलक्टर साहब को लिखकर दे दिया है कि अब जनता नमक पर टैक्स नहीं देगी। हम बिना लाइसेंस के नमक बनाएँगे। आप लोगों से निवेदन है कि शांति बनाए रखें। नमक बनाना प्रारंभ हुआ है। हमलोग सत्य–अहिंसा के पुजारी हैं। गाँधीजी के बताए हुए रास्ते पर चलकर हमें अपने देश को अंग्रेजी शासन से मुक्त कराना है। कुछ क्षण में हमारे ऊपर गोली चलेगी, हमको खौलते गर्म कडाह में झोंक दिया जाए, हमको मार दिया जाए, जेल में बन्द कर दिया जाए लेकिन आप उपस्थित तमाम लोगों को हिंसा का रास्ता नहीं अपनाना है। आप लोग शान्ति से देखें कि अंग्रेजी हुकूमत क्या करती है और हम सत्याग्रही क्या करते हैं। किसी प्रकार का हंगामा नहीं होना चाहिए।[12]

डॉ. श्रीकृष्ण बाबू ने वहाँ उपस्थित हजारों लोगों से हाथ उठाकर शान्ति बनाए रखने का भी वादा किया। ज्योहि चूल्हा जलाया गया, वहां पर मौजूद अंग्रेजी सरकार के सी.आई.डी ने बेगूसराय में एस. डी. ओ. अय्यर सहब को सूचना दे दी कि नमक बनना शुरू हो गया है। इसके बाद अय्यर साहब ने ए. एस. पी. को फौज लेकर गढ़पुरा कूच करने का आदेश दिया। आदेश के बाद अय्यर साहब और ए.एस. पी आगे और पीछे–पीछे उनकी फौज साथ में चौकीदार–दफदार का काफिला भी मार्च करते हुए पंडाल के पास पहुँची। अय्यर साहब सीधे पण्डाल में पहुँचे उस समय डॉ. श्रीकृष्ण बाबू भाषण कर रहे थे, अय्यर साहब ने डॉ. श्रीकृष्ण सिंह के सामने हाथ बढ़ाकर कहा–'श्री बाबू लाइसेंस दीजिए। श्रीकृष्ण सिंह ने कहा–कौन–सी चीज का लाइसेंस आप माँग रहे हैं? अय्यर साहब ने कहा–आप जो नमक बना रहे हैं उसके लिए कलक्टर साहब से लाइसेंस लेना पड़ता है। क्या आपने कलक्टर साहब से लाइसेंस प्राप्त किया है?

डॉ. श्रीकृष्ण बाबू ने कहा कलक्टर साहब 'लाइसेंस की अब जरूरत नहीं है। अब भारतवर्ष के लोग बिना लाइसेंस के नमक बनाएंगे और बिना टैक्स दिए नमक खाएंगे। इसके बाद अय्यर साहब ने ए.एस.पी. को आदेश दिया कि डॉ. श्रीकृष्ण सिंह के पास नमक बनाने का लाइसेंस नहीं है, नमक बनाना अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ है अतः आप इन्हें नमक बनाने मत दीजिए। ख्याल रहे कि सरकारी नियम टूटने नहीं पाए। ताकत का सहारा लेकर यहाँ से सभी को हटा दीजिए। चूल्हा–चौकी तोड़ दीजिए। ए.एस.पी. ने अपने मातहत हवलदारों को तुरन्त आदेश दिया कि स्वयं सेवको को हटाकर लाठी के सहारे सारे चूल्हा–चौकी को तोड़ दो।[13]

प्रतिक्रिया स्वरूप 24 स्वयं सेवको का जत्था जो पहले से ही तैयार था तुरन्त एक दूसरे के हाथ को पकड़कर कड़ाह को घेरे में ले लिया। अंग्रेजी सिपाही भी अपनी ताकत से लोगों से हाथापाई खीचतान शुरू कर दिया। इसी बीच एक मुसलमान सिपाही ने गोगरी के एक स्वयंसेवक मुरलीधर मिश्र को बड़े जोर से खीचा जिसके कारण मिश्र जी शोरा के खौलते कड़ाह में गिर पड़े। उनका पूरा चेहरा जल गया। करिया नामक चौकीदार ने पीछे से डॉ. श्रीकृष्ण बाबू का पैर खींचा।[14]

वे गिर पड़े, किन्तु पुनः उठकर सत्याग्रहियों का मनोबल ऊँचा करते हुए कहा–''मुट्ठी टूट जाए पर खुले नहीं।''[15]

स्वयं सेवक के कड़ाह में गिरने और कड़ाह के उलटने के कारण शोरा का छिलका उड़कर डॉ. श्रीकृष्ण बाबू के शरीर पर पड़ा जिसके कारण उनके शरीर पर कई फोड़े हो गए। इसके बाद सिपाहियों और स्वयं सेवकों में हाथापाई, पकड़ खींच, उठा–पटक तेज होने लगी। डॉ. श्रीकृष्ण बाबू की टोपी कहीं गिरी, चश्मा छिटककर दूर फेंका गया। उसके शीशे फूट गए। उनकी आँखों में भी चोट आई। शरीर पर के कपड़े भी फट गए। उनके पैर–ठेहुना तथा हाथ पर फोड़े निकल आए। उनका सम्पूर्ण शरीर मिट्टी से लथपथ हो गया। अन्त में जब वे बिल्कुल निशक्त हो गए तब खौलते कड़ाह से किसी प्रकार उन्हें अलग किया गया। तोड़–फोड़, उठा–पटक, खींच पकड़ का ताण्डव लगभग एक घंटे तक गढ़पुरा के सत्याग्रह स्थल पर चलता रहा। उधर हालत को देखकर स्थानीय लोग आग–बबूला होकर बौखला रहे थे। डॉ. श्रीकृष्ण सिंह तब भी लोगों से शांति बनाए रखने का आग्रह कर रहे थे। पुलिस सारे कार्यकर्ताओं को मार–पीट कर, चूल्हा–चौकी तोड़कर वापस लौट गयी।

घायल डॉ. श्रीकृष्ण सिंह और दूसरे स्वयं सेवकों को विन्देश्वरी बाबू के निवास पर लाया गया।[16] यहाँ उन्होंने अपने घाव का इलाज करवाया तथा अपने फटे हुए कपड़े को बदला फिर उस दिन के सत्याग्रह कार्यक्रम को समाप्त कर अगले दिन का कार्यक्रम कार्यकर्ताओं को समझाकर शाम को बेगूसराय चले गए। मटिहानी के सतीश बाबू के पास नमक सत्याग्रह की अगली योजना थी, अतः डॉ. श्रीकृष्ण सिंह बेगूसराय से मटिहानी चले गए। दूसरे दिन जब पुनः श्रीकृष्ण सिह मटिहानी से लौटकर गढ़पुरा आ रहे थे तो पुलिस पहले से ही कहीं से बना हुआ नमक प्रस्तुत कर वारन्ट निकलवा लिया था जबकि उस दिन तक गढ़पुरा में नमक नहीं बना था। लेकिन फर्जी साक्ष्य प्रस्तुत कर उनकी गिरफ्तारी की गई। गिरफ्तारी के बाद पुलिस उन्हें बेगूसराय से बखरी डाक बगला पर ले गई जहाँ एस. डी. ओ अय्यर की इजलास में मात्र दस मिनट की सुनवाई के पश्चात् उन्हें छः महीने की सजा सुना कर भागलपुर

जेल भेज दिया गया।[17] दूसरे दिन पुलिस सत्याग्रह करने वाले अन्य नेता जैसे कमलेश्वरी बाबू, कॉमरेड ब्रह्मदेव आदि को गिरफ्तार कर लिया। इसके बावजूद गढ़पुरा में नमक सत्याग्रह आन्दोलन चलता रहा।

श्रीकृष्ण सिंह एवं इनके सहयोगियों की गिरफ्तारी के विरोध में मुंगेर जिले सहित पूरे बिहार में सरकार की दमनकारी नीति की घोर निन्दा हुई। श्रीकृष्ण सिह को कुछ ही दिनों में भागलपुर जेल से चार साथियों सहित जिसमे नंद कुमार सिंह प्रमुख थे को हजारीबाग सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया। हजारीबाग ले जाते समय श्रीकृष्ण सिंह का बायाँ हाथ नन्द कुमार सिंह के दाहिने हाथ से बंधा था। नाथनगर रेलवे स्टेशन पर लोगों की भारी भीड़ जमा हो गयी थी। श्रीकृष्ण सिंह ने नंद कुमार सिंह के साथ बंधे हाथ उठाकर लोगों का अभिवादन स्वीकार करते हुए कहा कि ''इस हथकड़ी की कुंजी उनके देशभक्त साथियों के हाथों में ही है।''[18]

अंग्रेजी सरकार की इस बर्बरतापूर्ण कारवाई पर उस समय के अखबारों में भी कड़ा विरोध किया था। डॉ. श्रीकृष्ण सिंह को हथकड़ी पहनाकर जेल भेजने से बिहार तथा उड़ीसा लेजिस्लेटिव कौंसिल में भी काफी हंगामा हुआ। धनराज शर्मा, रजनधारी सिंह एवं मौलवी अब्दुल घानी ने इस पर सदन में तत्कालीन सरकार से जवाब मांगा। पूरे प्रांत में भी इस पर आक्रोश बढ़ता जा रहा था फलस्वरूप सरकार ने नियमावली में परिवर्तन कर प्रावधान कर दिया कि 'अ' और 'ब' वर्ग के कैदियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने के क्रम में हथकड़ी नहीं पहनाई जाएगी जब तक कि रास्ते में उनके भाग जाने की संभावना नहीं हो। इन गिरफ्तारियों के पश्चात् भी नमक बनाने की प्रक्रिया में किसी तरह का व्यवधान नहीं हुआ। गढ़पुरा ग्राम उत्तरी बिहार का नमक बनाने का प्रमुख केन्द्र बन गया। सत्याग्रह की बागडोर शिरनियाँ के श्री सुरेन्द्रचन्द्र मिश्र को दिया गया। लगभग तीन सप्ताह तक नमक बनाने का कार्यक्रम चलता रहा। तैयार नमक को लोगों ने ऊँची कीमत पर खरीदना शुरू किया। इस अन्तराल में पुलिस का भी उपद्रव जारी रहा और सत्याग्रहियो को गिरफ्तार करने का सिलसिला भी चलता रहा।

अक्टूबर 1930 में श्रीकृष्ण सिंह जेल से रिहा होने के बाद समूचे मुंगेर जिले में सविनय अवज्ञा आदोलन को प्रखर और सफल बनाने में अपनी पूर्ण ताकत लगा दी। तकरीबन सौ से अधिक स्थानों पर कार्यकर्ताओं ने निर्भय होकर नमक बनाने का कार्यक्रम जारी रखा। नमक बनाने का कार्य जून 1930 ई. तक चलता रहा और लोगों ने नमक कानून का उल्लंघन किया।

निष्कर्ष

इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि डॉ. श्रीकृष्ण सिंह के नेतृत्व में बिहार के कार्यकर्ताओं एवं आंदोलनकारियों ने अपना बहुमूल्य योगदान देकर गाँधीजी के नेतृत्व में चलाए गए देशव्यापी नमक सत्याग्रह आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बिहार में गढ़पुरा (बेगूसराय) में इस दौरान भारी जन आंदोलन एवं विप्लव हुआ। आंदोलन सविनय अवज्ञा आंदोलन की सीमाओं से भी बाहर निकल गया। परिणाम स्वरूप इस सत्याग्रह ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम महात्मा गाँधी एवं बिहार में स्वयं डॉ. श्रीकृष्ण सिंह को नए सिरे से परिभाषित एवं प्रतिष्ठित भी किया।

संदर्भ सूची

1. प्रसाद, रामचन्द्र, (1986) *'आधुनिक भारत के निर्माता श्रीकृष्ण सिंह',* प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, अक्टूबर 1986, पृ. 25।
2. सिंह, प्रसाद, कवीन्द्र, (2011) *'डॉ. श्रीकृष्ण सिंह और 1930 ई. का नमक सत्याग्रह',* प्रकाशित स्मारिका, 21 अक्टूबर, 2011, पटना, पृ. 96।
3. पूर्वोक्त।
4. पूर्वोक्त।
5. प्रसाद, रामचन्द्र, पूर्वोक्त, पृ. 56।

6. 'द सर्चलाईट', दैनिक समाचार पत्र, 18 अप्रैल, 1930।
7. सिंह, नाथ, पशुपति, (1987) *'बिहार केसरी डॉ. श्रीकृष्ण सिंह स्मृति–कलश'*, श्रीकृष्ण ज्ञान मंदिर, छज्जूबाग, पटना, पृ. 181।
8. सिंह, कुमार समीर, (2001) *'बिहार के राजनीतिक एवं सामाजिक संदर्भ में डॉ. श्रीकृष्ण सिंह का योगदान'*, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, पृ. 52।
9. प्रसाद, रामचन्द्र, पूर्वोक्त, पृ. 57।
10. सिंह, नाथ, पशुपति, पूर्वोक्त, पृ. 182।
11. पूर्वोक्त, पृ. 58।
12. सिंह, नाथ, पशुपति, पूर्वोक्त, पृ. 184।
13. पूर्वोक्त, पृ. 185।
14. पूर्वोक्त, पृ. 186।
15. सिंह, नारायण महेन्द्र, (2001) *'बिहार केसरी और नमक सत्याग्रह नरता के अभियान'*, बिहार इतिहास परिषद्, बिहार, पृ. 59।
16. सिंह, प्रसाद कवीन्द्र, पूर्वोक्त, पृ. 100।
17. सिंह, कुमार समीर, पूर्वोक्त, पृ. 54।
18. प्रसाद, रामचन्द्र, पूर्वोक्त, पृ. 58।

——==00==——